उम्मीद अब भी बाकी है

संदर्भ आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण

निरंजन सहाय

सीखने की प्रक्रिया में हुए नए अनुसंधान यह बताते हैं कि सीखने की क्रिया तभी कारगर हो सकती है, जब विद्यार्थियों को सीखने की क्रिया में भागीदार बनाया जाय। सीखने की क्रिया के दौरान विद्यार्थियों को कक्षायी प्रक्रिया में निम्नांकित अवसर जरूर मिलने चाहिये-

- सीखते समय विचारों को प्रकट करने के
- अपने विचारों पर अपनी राय प्रकट करने के
- जो विद्यार्थियों ने सीखा/जाना, उन्हें अपने परिवेश से जोड़ने के

उल्लिखित अवसरों के लिए विभिन्न संदर्भ कक्षायी प्रक्रिया का हिस्सा बनाए जा सकते हैं, संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण पद्धति भी उनमें एक है। यह शास्त्रीय ढंग से व्याकरण सीखने-समझने से अधिक कारगर विधि है। प्रायः विद्यार्थियों की दुनिया में व्याकरण शिक्षण एक ऐसे आतंक की तरह उपस्थित होता है कि उनमें व्याकरण अध्ययन के प्रति भय पैदा होता है। विद्यार्थी जिस विषय से डर जाता है, उसे वह कभी ठीक से नहीं सीख सकता। यह डर केवल हिंदी से ही नहीं जुड़ा है दुनिया की अन्य भाषाओं में भी व्याकरण शिक्षण की यही स्थिति है। उदाहरण के लिए बारबियाना स्कूल (इटली) के आठ छात्रों ने मिलकर जब अपने अध्यापक के नाम पत्र लिखा तब अनेक सुझावों में एक सुझाव यह भी था कि विद्यार्थियों पर व्याकरण का अतिरिक्त भार न डाला जाय। इस वाकये का उल्लेख महज इसलिए किया गया ताकि हम यह समझ सकें कि व्याकरण के संदर्भ कैसे बोझिल रूप में कक्षायी प्रक्रिया का हिस्सा बनते हैं। व्याकरण कोई तयशुदा डिब्बा नहीं है, जिनमें कुछ उदाहरणों को हम अंटाने की कोशिश करें। दरअसल कोई भी भाषा कुछ नियमों के आधार पर चलती है। उन नियमों के आधार को स्पष्ट कर देना ही व्याकरण समझना या जानना है। व्याकरण को पढ़ना/पढ़ाना भाषा के प्रयोक्ता के सामुदायिक नियमों (भाषा वैज्ञानिक और सामाजिक, सांस्कृतिक संरचनाओं) को समझना/समझाना है। आमतौर पर विद्यालयों में व्याकरण की परिभाषा तथा भेदों/उपभेदों को याद कराया जाता है। इससे परीक्षाओं में अंक प्राप्ति तो हो जाती है, लेकिन वे इसका बोलने, पढ़ने और लिखने में उपयोग नहीं कर पाते। लेकिन यदि वे संदर्भ में व्याकरण समझें/समझाएं तब वह भाषाई प्रयोग का जीवंत हिस्सा बन जाता है।

दुनिया की कोई भी भाषा अंततः कुछ खास नियमों के अनुसार बनी व्यवस्था है। इस व्यवस्था को ही समेकित रूप में व्याकरण कहा जाता है। व्याकरण अव्यक्त या अमूर्त होता है। यह भाषा बरतने वाले की सामूहिक चेतना का हिस्सा होता है। इस अमूर्त रूप को भाषा वैज्ञानिक या वैयाकरण शास्त्र के रूप में मूर्त करते हैं। इस विश्लेषित रूप को ही हम व्याकरण कहते हैं। भाषा के साथ जब क्रिया जुड़ती है यानी जब भाषा केवल

पढ़कर नहीं बल्कि करके सीखी जाए तब हम उसे संदर्भ आधारित या संदर्भ सहित व्याकरण सीखना कहते हैं। इसे और भी बेहतर तरीके से समझने के लिए कृष्ण कुमार की किताब 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' के निम्नांकित अंश को देखें,

'बच्चों की भाषा का संबंध उन अनुभवों से है जिन्हें वे अपने हाथों और शरीर से स्वयं करते हैं और उन वस्तुओं से भी है जिनके संपर्क में वे आते हैं। बचपन में शब्द और क्रियाकलाप साथ-साथ चलते हैं। क्रियाकलाप और अनुभवों को आत्मसात करने और व्यक्त करने के लिए शब्दों की जरूरत होती है। कोई अनुभव जब पूरा हो चुकता है, उसके बाद भी वह शब्दों के जरिए उपलब्ध रहता है। बच्चे जिन चीजों के संपर्क में आते हैं उनसे और घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए वे शब्दों की मदद लेते हैं। दूसरी तरफ, ऐसे शब्द, जो बच्चों के सक्रिय अनुभवों और वस्तुओं से जुड़े नहीं होते, उनके लिए खाली और बेजान रहते हैं। 'बिल्ली', 'दौड़ना', 'गिरना', 'नीला', 'नदी' और 'खुरदरा' जैसे शब्द यदि पहले-पहल किसी क्रियाकलाप या अनुभव के संदर्भ में नहीं आएं तो उनका अर्थ बच्चे के लिए बहुत सतही रहेगा। केवल एक सक्रिय अनुभव के बाद ये शब्द एक बिम्ब से जुड़ते हैं और भविष्य में सार्थक इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होते हैं।' (1996 : 2, कृष्ण कुमार, बच्चे की भाषा और अध्यापक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली)

इस लंबे उद्धरण में भाषा शिक्षण में अनुभव के महत्व को अच्छी तरह रेखंकित किया गया है। कहना न होगा व्याकरण शिक्षण भी तभी कारगर हो सकता है जब वह रोजमर्रा की कक्षाओं में होने/करने वाली क्रिआओं का हिस्सा बने। पर किसी समझ का अनुभव आधारित अवबोध तभी संभव है, जब उसके बारे में हमारी समझ एकदम साफ हो।

व्याकरण की अवधारणा पर बात करने के पहले यह साफ तौर पर समझ लेना चाहिए कि उसकी शिक्षा नहीं होती है उसका बोध होता है। यानी व्याकरण शिक्षा नहीं है अवबोध है। व्याकरण शिक्षण की पारंपरिक समझ में कुछ नियमों को रटने पर बल दिया जाता है। अर्थात पहले नियमों के खाके बनाए जाएं, फिर उनमें उदाहरण ठूंस-ठूंस कर भर दिए जाएं। पहले कहा जा चुका है, दुनिया की प्रत्येक भाषा कुछ नियमों को समाहित किए हुए होती है। इन नियमों का उद्‌घाटन ही व्याकरण अवबोध है। व्याकरण शिक्षण से भाषा के आंतरिक रहस्यों का पता चलता है। इन आतंरिक रहस्यों से जब हम परिचित होते हैं तब विभिन्न भाषाई कौशलों और सृजनशीलता के रहस्यों से भी हम रूबरू होते हैं। दुनिया का हर काम भाषा में ही संभव है। भाषा के बिना किसी विचार की कल्पना तक नहीं की जा सकती। इस संदर्भ को और भी बेहतर ढंग से समझने के लिए निम्नांकित अवतरण को पढ़ें -

'भाषा बहुसमर्थ संरचना है। हमारी मति और कृति का अधिकांश उसी के जरिए या उसी में व्यक्त होता है। भर्तृहरि ने उसकी क्षमता के बारे में यहां तक घोषणा कर दी है कि जगत् में ऐसा कोई विचार या प्रत्यय नहीं है, जो भाषा के अधीन या उस पर आश्रित नहीं है - 'न सोस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।' (वाक्यपदीयम्) इंसान की भाषा सीखने की प्रवृति जन्मजात होती है। अपने भाषिक समाज में रहते हुए वह भाषा सुनता है, भाषिक प्रयोग देखता है, मन ही मन उसका विश्लेषण करता है और इस तरह से भाषा नियमों को आत्मसात् करता रहता है। इसी प्रक्रिया से निरंतर गुजरते वह नियमबद्ध व्यवहार के रूप में कोई भी भाषा सीखता है।' (2013 : 51, रवीन्द्र कुमार पाठक, संदर्भ में व्याकरण शिक्षण का औचित्य और स्वरूप, परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, दिल्ली)

अर्थात् भाषा की नियमबद्धता को समझना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो भाषा बरतने वाले प्राकृतिक रूप से समझ जाते हैं। जब इस नियमबद्धता को अध्ययन की दुनिया का हिस्सा बनाते हैं, तब उसे व्याकरण कहते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षित, अशिक्षित सभी व्याकरण जानते हैं। उदाहरण के लिए स्कूल आने से पहले बच्चे-बच्ची को पता रहता हैः

1. भाई जाता है।
2. बहन जाती है।

यानी उसे पता है भाई (पुल्लिंग) के लिए जाता (क्रिया) का प्रयोग होता है जबकि बहन (स्त्रीलिंग) के लिए जाती। यह अलग बात है कि उसे व्यावहारिक जानकारी तो है, पर शास्त्रीय जानकारी यानी स्त्रीलिंग पद, पुल्लिंग पद, क्रियापद आदि की पारिभाषिक जानकारी नहीं है। व्याकरण की समझ का आकलन इससे नहीं होता कि बच्चे/बच्चियां व्याकरण की तकनीकी शब्दावली और परिभाषाओं में कितनी कुशलता रखते हैं। संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि व्याकरण की विभिन्न अवधारणाओं या पक्षों का प्रयोग हमेशा वाक्य या कहानी, कविता या अन्य पाठों के संदर्भ में होता है। कहना न होगा यह आवश्यक है कि वाक्य या पाठ के संदर्भ में व्याकरण के बिन्दुओं को बच्चे/बच्चियां पहचान सकें एवं संदर्भ में उनका इस्तेमाल कर सकें। अन्य शब्दों में शुद्ध/अशुद्ध की पहचान व्याकरण शिक्षण का आधारभूत उद्देश्य नहीं है, उसका आधारभूत उद्देश्य है संप्रेषणीयता का विकास। अर्थात् विशुद्ध व्याकरण नहीं, व्याकरण और रचना की ओर जाना व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य है। यदि हम रचना के लक्ष्य को अपनी निगाह में नहीं रखेंगे, तब उसका यह खामियाजा हमें भुगतना पड़ेगा कि शुद्धता/अशुद्धता के चक्कर में कक्षा में चुप्पी छा जाएगी और अशुद्ध होने के खतरे से कुंठा का माहौल बनेगा। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भाषा शिक्षण के बारे में एक बहुत महत्वपूर्ण राय देती है - ''भाषा तब सीखी जाती है, जब वह भाषा के रूप में नहीं पढ़ाई जाती, बल्कि सार्थक संदर्भों से जोड़ कर उसे पढ़ाया जाता है।'' संदर्भ का ही एक तरीका गतिविधि भी है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि भाषायी कौशल अर्जित करने का एक महत्त्वपूर्ण रास्ता व्याकरण शिक्षण से होकर गुजरता है। व्याकरण पढ़ने-पढ़ाने का सबसे प्रचलित तरीका निगमन विधि है। अर्थात् पहले नियम (सामान्य तत्व) फिर उदाहरण अर्थात् विशेष तत्व की ओर प्रस्थान। लेकिन स्वाभावतः हमारी चेतना पहले विशेष तत्व को ग्रहण करती है, फिर सामान्य तत्व को। इसे आसान शब्दों में समझें, उदाहरण हमारे बोध में पहले आते हैं, नियम या परिभाषा बाद में। परम्परागत व्याकरण शिक्षण इसके ठीक उलट है। इसका परिणाम यह होता है कि व्याकरण शिक्षण में भाषा का संदर्भ निगाहों से ओझल हो जाता है और वह (व्याकरण शिक्षण) वैयाकरण के मन में केन्द्रित होने लगता है। अब व्याकरण साधन नहीं रह जाता वह साध्य में रूपांतरित हो जाता है, जबकि वह भाषा शिक्षण के लिए साधन है। भाषा के अध्यापक/अध्यापिका के लिए यह जरूरी है कि वह अनुभवों से भाषा को जोड़ सके। जब ज्यादातर अध्यापक/अध्यापिका इस मामले को घर की जिम्मेदारी मानकर अपने दायित्व से पल्ला झाड़ लेते हों, ऐसे में कृष्ण कुमार ने इस संदर्भ में हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए कहा है, ''माता-पिता ने जो भी किया हो या न किया हो, अध्यापक की जिम्मेदारी स्पष्ट है। उसे ऐसा वातावारण पैदा करना है जिसमें बच्चे भाषा को लगातार जीवन के अनुभवों और चीजों से जोड़ सकें। ऐसा करने के लिए ये बातें मददगार होंगीः

- बच्चे स्कूल में कई तरह की वस्तुएं (जैसे पत्तियां, पत्थर, पंख, तिनके, टूटी-फूटी चीजें) लाएं और उनके बारे में बात करें, पढ़ें, लिखें;
- बच्चों से उन अनुभवों के बारे में कहने, लिखने और पढ़ने को कहा जाए जो उन्हें स्कूल के बाहर हुए हैं;
- बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाया जाए जिससे वे स्कूल के गिर्द फैली दुनिया की तमाम छोटी-मोटी चीजें (जैसे टूटी हुई पुलिया, कीचड़ से भरा गड्ढा, मरा हुआ कीड़ा, गोंसले में अंडे) बारीकी से देख सकें और उनकी चर्चा कर सकें। स्कूल के पड़ोस की ऐसी शोध-यात्राएं भाषा सीखने के लिए मूल्यवान सामग्री दे सकती हैं...।

ऐसे स्कूल में, जहां बच्चे अपने हाथों से तरह-तरह के काम नहीं कर पाते, जहां वे अधिकांशतया बैठे और अध्यापक की बातें सुनते रहते हैं, और जहां छूने, उलटने-पुलटने, तोड़ने और ठीक करने के लिए चीजें नहीं होतीं, भाषा के कौशलों का विकास अच्छी तरह नहीं हो सकता।''

(1996: 2, कृष्ण कुमार, बच्चे की भाषा और अध्यापक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली)

इस उद्धरण का मूल उद्देश्य है, यह समझने में हमारी मदद करना कि व्याकरण सीखते समय विद्यार्थी को निष्क्रिय श्रोता की जगह सक्रिय भागीदार में कैसे रूपांतरित किया जाय। जब विद्यार्थी गतिविधि के आलोक में सक्रिय होता है, तब

उसके सीखने की योग्यता में आश्चर्यजनक तरीके से बढ़ोतरी होती है। आइए संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण के कुछेक उदाहरण देखें। संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण का तात्पर्य यह है कि किसी खेल, संवाद, फिल्म या अन्य किसी माध्यम से एक संदर्भ प्रस्तुत किया जाए और सिद्धांत तक उदाहरणों की दुनिया से गुजरते हुए पहुंचा जाए। कक्षायी स्थितियों में कुछ व्याकरणिक अवधारणाओं की समझ निम्न प्रकार से बनाई जा सकती है-

संज्ञा सीखें/जानें

नीचे दी गई कहानी के एक अंश को हम पढ़ें-

मुरुगन और पारुल अपने माता-पिता के साथ घूमने के लिए कश्मीर जा रहे थे। उन्हें रेलगाड़ी द्वारा कश्मीर जाना था। ऑटो-रिक्शा द्वारा मैसूर स्टेशन पहुंचे। वहां मुरुगन और पारुल ने लोगों की भीड़ को देखा। वहां लोग अपने साथ बैग, पानी की बोतल आदि लिए हुए थे। सामान उठाने के लिए कुछ लोग कुली की सहायता ले रहे थे। हमने वहां खाने-पीने की कुछ चीजें ली और रेलगाड़ी में बैठकर कश्मीर के लिए खुशी-खुशी रवाना हो गए।

यहां वाक्य में हम कई प्रकार के नामों को देख सकते हैं। जैसे-

व्यक्तियों के नामः- मुरुगन, पारुल

जातियों के नामः- माता-पिता, कुली

समूहों के नामः- लोगों की भीड़

वस्तुओं एवं द्रव्यों के नामः- रेलगाड़ी, ऑटो-रिक्शा, बैग, पानी की बोतल, सामान, खाने-पीने की चीजें

नगरों के नामः- कश्मीर, मैसूर

स्थान के नामः- स्टेशन

भावों के नामः- खुशी-खुशी

इन्हें ही हम संज्ञा कहते हैं। अतः किसी भी नाम को संज्ञा कहते है।

विद्यार्थियों के कक्षायी स्तर के अनुसार संज्ञा के विभिन्न उपभेदों से परिचित कराया जा सकता है।

आओ सर्वनाम को जानें

नीचे लिखे अवतरण को कुछ विद्यार्थियों से पढ़वाया जाएगा-

''शबनम के घर कक्षा के बहुत सारे मित्र आये। शबनम ने अपना कमरा खूब सजाया हुआ था। शबनम के मित्र शबनम के लिए ढेर सारे उपहार लाये। मित्रों ने शबनम को बधाई दी और सभी मित्र खूब खेले। मित्रों ने गाने भी गाए। शबनम बहुत खुश थी।''

फिर उनका ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाएगा कि,

- यहां शबनम और मित्र शब्द कई बार आए हैं।

तो कहीं ऐसा लगता है कि पढने में प्रवाह नहीं बन पा रहा है। भाषा में रुकावट-सी आ रही है। अतः यहां अनुच्छेद में शबनम और मित्र शब्दों के दुहराव के बदले उस, वे, उन्होंने, उसको, वह इत्यादि शब्दों का प्रयोग करके देखते है-

''शबनम के घर कक्षा के बहुत सारे मित्र आये। उसने अपना कमरा खूब सजाया हुआ था। वे, उसके लिए ढेर सारे उपहार लाए। उन्होंने, उसको बधाई दी और वे सब खूब खेले। उन्होंने गाने भी गाए। वह बहुत खुश थी।'' इस तरह के अन्य उदाहरणों की आवृत्ति कराने के बाद इस अवधारणा को स्पष्ट किया जाएगा कि, वाक्य में प्रवाह बनाए रखने के लिए, दुहराव से बचने के लिए नाम के बदले हम दूसरे शब्दों का प्रयोग करते है। यही बदले में प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है।''

क्या है क्रिया

बच्चों को कोई गीत सुनाया जाएगा या उन्हें कुछ चित्रों को दिखाया जाएगा। फिर उन्हें स्पष्ट किया जाएगा कि हम सारा दिन कुछ न कुछ करते हैं। हम आगे इन वाक्यों के माध्यम से देख सकते हैं, जैसे -

उसे खाना खाना है।

मैं पढ़ रहा हूं।

वह दौड़ा।

तुम जाओगे।

यहां वाक्य में हम देख रहे है कि कुछ काम हो रहा है। वाक्यों में क्रमशः खाने, पढ़ने, दौड़ने और जाने का काम हो रहा है। इसे ही हम क्रिया कहते हैं। अतः किसी काम के होने या करने का पता चले तो उसे हम क्रिया कहते है।

वर्ण-विचार करें

विद्यार्थियों से पूछा जाएगा, तुम किससे लिखते हो? वे शायद कहेंगे कलम, पेन्सिल, बाल पेन आदि-आदि। फिर उनसे संवाद स्थापित करते हुए, कहा जाएगा इन्हें 'ब्लैक बोर्ड' पर लिखो। फिर उनसे संवाद किया जाएगा,

आओ एक शब्द देखें - कलम

इसके तीन टुकड़े हो सकते है - क ल म

'क', 'ल', और 'म' के भी दो-दो टुकड़े हो सकते हैं-

क = क्+अ

ल = ल्+अ

म = म्+अ

अब - क्, अ, ल्, अ, म्, अ

के टुकडें नहीं हो सकते। अतः यही ध्वनियां या वर्ण, हैं।

इस प्रकार वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है।

संधि-व्यवस्था कैसे समझें

शिक्षक/शिक्षिका विद्यार्थियों से कुछ चित्र दिखाकर संवाद स्थापित करेंगे। बच्चे सवालों का जवाब देंगे। इस क्रम में खेल-खेल में कतिपय व्याकरणिक अंश से परिचय होगा -

दो शब्द देखे - विद्या आलय

अब इसे बगैर रुके एक साथ एक ही शब्द के रूप में बोलिए।

विद्या आलय - विद्यालय

हमने देखा, विद्या का अंतिम आ और आलय का आरंभिक आ मिलकर 'आ' की ध्वनि में ही समाहित हो गए।

इसी प्रकार कुछ और उदाहरण लिए जाएं-

भाव अर्थ - भावार्थ

नर + ईश - नरेश

महा + इन्द्र - महेंद्र
तथा + एव - तथैव
इति + आदि - इत्यादि
सम् + गीत - संगीत
सम् + योग - संयोग
मनः + हर - मनोहर
मनः + रंजन - मनोरंजन

इस प्रकार दो ध्वनियों के मिलने से जो परिवर्तन होता है वह संधि कहलाता है।

इसी प्रकार अनेक उदाहरणों की मदद से संधि के भेदों एवं उपभेदों को समझा जा सकता है।

उल्लिखित उदाहरणों के माध्यम से यह समझना आसान है कि पारंपरिक व्याकरण शिक्षण में जहां पहले सिद्धांत या सूत्र पर बात होती है, वहीं संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण में पहले कुछ गतिविधियां करवाई जाती हैं, फिर उनसे बनी समझ के आलोक में व्याकरण नियमों को आत्मसात किया जाता है। कहना न होगा कि विभिन्न व्याकरणिक जानकारियों और उनसे बनी समझ का भाषाई कौशलों के निर्माण और विकास में बहुमुखी योगदान होता है।

संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण : कुछ अन्य आवश्यक संदर्भ

हम सभी किसी - न - किसी परिवेश में हमेशा रहते हैं। यह परिवेश कभी घरेलू होता है, कभी सार्वजनिक, कभी राजनीतिक तो कभी शैक्षिक, कभी धार्मिक तो कभी सांस्कृतिक। इन सभी स्थितियों में हमारा काम भाषा के बल पर ही चलता है। यदि हम उन भाषिक व्यवहारों से कोई उदाहरण लें और उसके आधार पर किसी व्याकरणिक अवधारणा को समझाने का प्रयास करें, तब हमारे लिए व्याकरण की सार्थक समझ बनाना बेहद सरल काम हो जाता है। इससे हमें विभिन्न भाषिक संदर्भों के वर्तमान व्याकरणिक प्रयोग को समझने में भी सहूलियत होती है। यह हमारी समझ को उभयमुखी बनाता है। इसे और बेहतर तरीके से समझने के लिए यह अवतरण देखा जा सकता है। '' 'संदर्भ में व्याकरण शिक्षण' का अर्थ केवल इतना नहीं है, बल्कि व्याकरणिक परिभाषाओं और नियमों में निहित सामाजिक आशयों या संदर्भ के उद्घाटन से भी उसका संबंध है। यानी, एक तरफ सामाजिक/भाषाई संदर्भ में व्याकरण की तलाश और दूसरी तरफ मौजूदा व्याकरण में सामाजिक संदर्भ की तलाश करना - उभयमुखी। इस प्रक्रिया का नाम है 'संदर्भ में व्याकरण शिक्षण'। अर्थात्, इस विधि में संदर्भ में व्याकरण और व्याकरण में संदर्भ की युगपत् प्रणाली को माध्यम बनाना है, जिसमें भाषा में निहित सामाजिक आशयों को पढ़ते हुए व्याकरण शिक्षण भी अंतर्विष्ट है।'' (2013 : 51, रवीन्द्र कुमार पाठक, संदर्भ में व्याकरण शिक्षण का औचित्य और स्वरूप, परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, दिल्ली)।

संदर्भ आधारित व्याकरण की व्यापक समझ तभी संभव है जब इससे जुड़े विभिन्न संदर्भों को समझा जाय। संदर्भ में व्याकरण शिक्षण के व्यावहारिक और सैद्धांतिक दोनों तरह के लाभ हैं। सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे प्रशिक्षु प्रयोग के धरातल पर व्याकरण की समझ बना पाते हैं। इस समझ के क्रम में लगातार होने वाले संपर्क उनकी रुचि में इजाफा करते हैं। संदर्भ के संस्कार उनके भीतर पहले से मौजूद रहते हैं, इसका लाभ यह होता है कि उनके लिए व्याकरण सीखना एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन जाती है, व्याकरण पढ़ाई में कोई आयातित अवधारणा नहीं रहती। संदर्भ में व्याकरण शिक्षण उनके भाषा प्रयोग की सर्जनात्मकता को बढ़ाता है।

भाषा की नियमबद्धता और अन्य विशेषताओं के प्रति सजगता

भाषा की नियमबद्धता और भाषाई-बारीकियों को समझना व्याकरण शिक्षण का केन्द्रीय उद्देश्य है। रविन्द्र कुमार पाठक का यह अवतरण इस दृष्टि से उल्लेखनीय है, ''इसके माध्यम से व्याकरण सूचना की वस्तु नहीं रह जाता, बल्कि अनुभूति का विषय हो जाता है। इसका बड़ा उद्देश्य है- भाषाई बारीकियों के प्रति जागरूक व संवेदित करना, ताकि समाज

की अर्थ-वैज्ञानिक बारीकियों को समझ सके और तदनुसार प्रयोग कर सके - वैसी, उसके आस-पास या अतिक्रमित कर नयी संरचना रच सके। जैसे- व्युत्पत्ति का बोध कराने से नवीन शब्द-रचना की सूझ मिलती तथा नए अर्थ-बोध की संभावना भी विकसित होती है। इससे शब्द में निहित अन्यान्य आशयों (मूल अर्थ, सामाजिक अंतर्विरोध/अन्यान्य आदि) को पढ़ना संभव होता है। इन आशयों को पकड़ कर उस दिशा में सोचने और नया खोजने-रचने को प्रेरित होते हैं। जैसे - 'पर्यावरण = परि+आवरण'- इस व्युत्पत्ति को जान लेने पर 'पर्यावरण' के सूखे अर्थ की जगह धरती के चारो ओर के किसी प्राकृतिक आवरण का बोध होगा, फिर उस पर सोचने से हमारे भीतर पर्यावरण चेतना भी सुगबुगाने लगेगी।''(2013 : 57, रवीन्द्र कुमार पाठक, संदर्भ में व्याकरण शिक्षण का औचित्य और स्वरूप, परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, दिल्ली)।

इस प्रकार जब व्याकरण को गतिविधियों की सहायता से ससंदर्भ समझा जाता है तब भाषा शिक्षण के वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य जहां एक ओर भाषाई शुद्धता को हासिल करना है, वहीं उसका उद्देश्य समाज दर्शन को भी समझना है। इसे और सूक्ष्म संदर्भों की ओर ले जाएं, तब हम पाते हैं कि भाषा का वर्गगत, लिंगगत और जातिगत चरित्र भी होता है और जब हम व्याकरण को प्रयोग के माध्यम से समझते हैं, तब अनायास ही हम उक्त संदर्भों से भी रू-ब-रू होते चलते हैं।

दुनिया की हर भाषा नियमबद्ध होती है। व्याकरण के माध्यम से हम भाषा की ध्वनि-संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना, संवाद संरचना समझते हैं। जब इन संरचनाओं की समझ संदर्भ के माध्यम से बनती है, तब हम भाषा के श्रेष्ठ कौशलों को हासिल करने में सक्षम होते हैं।

मूल्यांकन के आधार

सामान्यतः व्याकरण ज्ञान के मूल्यांकन हेतु इस बात की परख की जाती है कि प्रशिक्षु को व्याकरण के कौन-कौन से नियम याद हैं, या प्रश्नों (जिनमें संदर्भों का जिक्र नहीं होता) के उत्तर देने के आधार पर उनकी योग्यता का मूल्यांकन कर लिया जाता है। इस तरह से सीखा गया व्याकरण भाषाई कौशलों में रचनात्मक भूमिका नहीं निभा पाता। आइए इस उद्धरण को पढ़ें, 'सामान्यतया विद्यार्थियों पर व्याकरण का आतंक कुछ इस कदर हावी रहता है कि उसके नाम से ही उन्हें डर लगने लगता है। और इस बात को हम सभी शिक्षक जानते हैं कि विद्यार्थी जिस विषय से डर जाय, उसे वह कभी भी ठीक से नहीं सीख सकता। व्याकरण का डर सिर्फ हिन्दी या अंग्रेजी छात्र-छात्राओं को ही नहीं सताता, बल्कि विदेशी भाषाओं में भी व्याकरण की स्थिति यही है। इसलिए बरबियाना स्कूल (इटली) के आठ छात्रों ने मिलकर 'अध्यापक के नाम पत्र' जैसी पुस्तक लिखी, जिसने शिक्षा जगत में भूचाल-सा ला दिया। इस पुस्तक में कई अन्य बातों के अतिरिक्त आठों छात्र अपने शिक्षकों को पत्र के माध्यम से यह सुझाव देना चाहते हैं कि बच्चों पर व्याकरण का अतिरिक्त भार नहीं लादना चाहिए।'

इस अवतरण में व्याकरण का भय विद्यार्थियों को इसलिए सता रहा है कि वे संदर्भहीन और गतिविधि रहित व्याकरण शिक्षण की उबाऊ दुनिया से गुजरे थे। सामान्यतया विद्यालयों में व्याकरण के नियम कंठाग्र कराने पर जोर दिया जाता है। व्याकरण शिक्षण के तरीकों को जानने के बाद अब यहां जानना जरूरी है कि सीखे या समझे गए व्याकरण का मूल्यांकन कैसे किया जाय। जब प्रश्न संदर्भ में दिया जाता है तब उसका मतलब होता है सार्थक और सटीक प्रश्नों के माध्यम से उत्तर के उस लोक में पहुंचना जहां बोध जागता है। दरअसल उत्तर और कुछ नहीं सवालों को ही डिकोड करना है। इसे कुछ उदाहरणों से समझें।

निम्नांकित वाक्यों को सावधानी पूर्वक देखें, और बताएं कि तीनों वाक्यों में प्रयुक्त दशानन में कौन से समास हैं?

रावण के दशानन थे।

रावण दशानन था।

दशानन जा रहा है।

यदि विद्यार्थी ने संदर्भों/गतिविधियों के माध्यम से व्याकरणिक समझ हासिल की होगी, तब वह आसानी से बता सकता है कि पहले वाक्य में द्विगु समास है, दूसरे वाक्य में कर्मधार्य समास है वहीं तीसरे वाक्य में बहुव्रीहि समास है।

एक अन्य उदाहरण देखिए-

निम्नांकित वाक्यों में अच्छा कौन सा व्याकरणिक पद है?

सर्वेश अच्छा लड़का है।

वह अच्छा पढ़ता है।

मेरे गुरु ने अच्छों-अच्छों को देखा है।

यहां पहले वाक्य में अच्छा विशेषण पद है, दूसरे वाक्य में क्रियाविशेषण पद है जबकि तीसरे वाक्य में संज्ञा पद है। इस तरह के प्रश्नों से यह जानकारी आसानी से मिल जाएगी कि विद्यार्थी ने व्याकरण की समझ संदर्भों में हासिल की है या नहीं। (इस अंश में पूछे गए सवाल परिप्रेक्ष्य, वर्ष 20, अंक 2, अगस्त 2013, न्यूपा से लिए गए हैं।)। ◆

लेखक परिचयः शिक्षा, समाज और संस्कृति के अंतर्संबंधों पर पिछले एक दशक से लेखनरत हैं। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी पद पर कार्यरत हैं। एनसीईआरटी दिल्ली एवं बिहार और राजस्थान सरकार के लिए विभिन्न शैक्षिक सामग्रियों का संपादन और लेखन किया है।

संदर्भ

1. कृष्ण कुमार 2014, बच्चे की भाषा और अध्यापक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नयी दिल्ली।
2. कमलानन्द झा 2010, मस्ती की पाठशाला, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नयी दिल्ली
3. भाषा की समझ, 2013, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली।
4. परिप्रेक्ष्य, वर्ष 20, अंक 2, अगस्त 2013, न्यूपा, नयी दिल्ली।